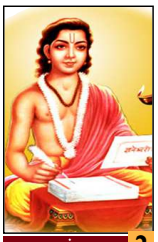

पृष्ठ संख्या 2

RNI NO.- RAJHIN/2021/80841

संस्कार सृजन

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादकः राम गोपाल सैनी
मो.: 9214996258

वर्षः 03 | अंकः 2 | पृष्ठ : 4 | जयपुर, सोमवार 22 अप्रैल, 2024 | मूल्यः 05 रू. | वार्षिक मूल्य : 150 रू.

गायत्री प्रज्ञा पीठ संस्थान चौमूं के सानिध्य में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ संपन्न

जयपुर (संस्कार सृजन)। शहर के राधाबाग कॉलोनी में स्थित गायत्री प्रज्ञा पीठ संस्थान चौमूं पर चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ संपन्न की गई। कार्यक्रम की शुरुवात प्रज्ञा गीत के माध्यम से की गई। साधकगणों ने 9 दिवसीय लघु अनुष्ठान का संकल्प पूरा किया जिस हेतु उन्होंने अपनी दशांश आहुतियां प्रदान की। गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन गजेंद्र सिंह बीजावत, रामधन टांक एवं सावरमल अग्रवाल द्वारा गायत्री परिवार का दुपट्टा पहनाकर थानाधिकारी प्रदीप शर्मा एवं धर्मपत्नी का सम्मान किया गया। देवीलाल मेमोरियल आई हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ विमल कुमावत एवम पत्नी डॉ.सुनीता कुमावत एवं किरण शर्मा उपसभापति नगर परिषद चौमूं का दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया।

गायत्री परिवार ट्रस्ट चौमूं के सचिव राजकुमार शर्मा ने बताया कि परम पूज्य गुरुदेव की आत्मा उनके साहित्य में बसती है जिन्होंने अपने जीवन सम्पूर्ण विचार और अनुभव और प्रयोगों को 3200 पुस्तकों के साहित्य में लिख दिया। आज मानव को जिस सद्ज्ञान की आवश्यकता है वो गुरुदेव के साहित्य में उपलब्ध है जिसका प्रचार प्रसार करना अति आवश्यक है। जिस हेतु प्रज्ञा पीठ में साहित्य पुस्तकालय भवन का निर्माण किया जाएगा और उसके प्रचार प्रसार के लिए एक इलेक्ट्रिक वाहन की व्यवस्था की जाएगी। इस अवसर पर थानाधिकारी प्रदीप शर्मा, दिनेश खेमावाला, विमल कुमावत एवं विनेश अग्रवाल ने अपना सहयोग प्रदान किया। साथ ही 80 धामों (बर्तन) की व्यवस्था सालिगराम अग्रवाल द्वारा की गई। गायत्री परिवार ट्रस्ट के अध्यक्ष विनेश कुमार अग्रवाल ने सभी भामाशाओ का हृदय से अभिवादन और धन्यवाद ज्ञापित किया। ट्रस्ट उपाध्यक्ष एडवोकेट जितेंद्र सिंह बीजावत ने बताया कि मिशन की योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा। आज के समय में मानव राह से भटक गया जिस हेतु उसे सदगुरु पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य से परिचय करवाना आवश्यक है। कार्यक्रम के पश्चात कन्या भोज का आयोजन किया जिसकी शुरुवात 24 कन्याओं के साथ हुई। लगभग 100 कन्याओं को भोज कराया गया।

कार्यक्रम के दौरान मदनलाल विजय, रामबाबू सैन, अभिषेक पालीवाल, भवानी सिंह, महेंद्र कुमार विजय, मनोहरलाल गुप्ता, नरेश अग्रवाल, श्रीराम बटवाल, अमित अग्रवाल, मालचंद बुनकर, मदनमोहन शर्मा, पवन कुमार माहेश्वरी, सोहन लाल कुमावत, नितेश कानूनगो, हेमराज कुमावत, समीर खरे, राजकुमारी वर्मा, संगीता गुप्ता, सुनीता विजय, परिव्राजक दयाराम राजपाल, रमेश राजपाल आदि परिजन उपस्थित रहे।

चौमूं माली समाज के 25 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्मेलन संपन्न, हजारों लोगों के समक्ष लिए सात फेरे

जयपुर (संस्कार सृजन)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी चौमूं माली समाज द्वारा माली समाज विकास समिति तहसील चौमूं के तत्वावधान में रींगस रोड, बस स्टैंड के पास स्थित सैनी समाज सभा भवन में रामनवमी के शुभ अवसर पर सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। गायत्री परिवार के विद्वानों द्वारा पाणिग्रहण संस्कार संपन्न करवाया गया।

माली समाज अध्यक्ष घीसालाल सैनी ने बताया कि सामूहिक विवाह समारोह में 25 जोड़े परिणय सूत्र बंधन में बंधे। प्रातः 8:15 बजे चौमूं थाना मोड़ स्थित आदर्श विद्या मंदिर में सिंयाला कार्यक्रम हुआ। इसके बाद यहां से सभा भवन के लिए बैंड बाजे और लवाजमें के साथ 25 घोड़ियों पर सवार होकर दूल्हे, बारात रवाना हुई। रास्ते में समाज सेवियों व विभिन्न संगठनों द्वारा ठंडा पेय और फूलों की वर्षा कर स्वागत किया गया। बाराती और समाजबन्धु नाचते गाते सभा भवन पहुंचे। 11:15 बजे तोरण और वरमाला का कार्यक्रम संपूर्ण हुआ। इसके बाद दोपहर 12:15 बजे पाणिग्रहण संस्कार का कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। दोपहर 1:15 बजे से भामाशाहों का सम्मान और वर वधुओं को अतिथियों द्वारा आशीर्वाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अंत में शाम 5 बजे विदाई समारोह के रूप में कार्यक्रम संपन्न हुआ। समाज के अतिथियों और भामाशाहों ने तन मन और धन से सहयोग किया जिससे सामूहिक विवाह समारोह भव्य रूप में आयोजित हुआ। माली समाज अध्यक्ष ने सभी आर्थिक, उपहार सामग्री, खाद्य सामग्री अन्य व्यवस्थाओं में सहयोग करने वाले भामाशाहों के साथ समाज बंधुओ का दिल से आभार व्यक्त किया। चौमूं विधानसभा क्षेत्र में पहली बार माली समाज ने सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन शुरू किया गया था जिससे प्रेरित होकर आज कई समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित करने लगे हैं। सामूहिक विवाह सम्मेलन करने से फिजूल खर्ची पर रोक लगती है और बचे हुए पैसे से वर-वधू अपना रोजगार चालू कर सकते हैं।

भामाशाहों ने किए उपहार भेंट - समिति और भामाशाहों ने वर वधुओं को आलमारी, पलंग, ड्रेसिंग टेबल, चोकी, स्टूल, गद्दा, कूलर, पंखा, एलईडी टीवी, मथानी, बर्तन, सिलाई मशीन, प्रेस, बाटी मेकर, कूर्सियां सहित सोने चाँदी के उपहार भी भेंट किए।

सामूहिक विवाह समारोह में पूर्व विधायक भगवान सहाय सैनी, नगर परिषद सभापति विष्णु कुमार सैनी, महामंत्री कन्हैयालाल पापटवान, राधेश्याम तंवर पूर्व अध्यक्ष, उपाध्यक्ष मोहरीलाल चांदोलिया, गणेश नारायण बैंनाडिया, शंकर लाल सिंगोदिया खेजरोली, ओमप्रकाश सिंगोदिया महार, दिनेश कुमार तिगरिया पूर्व अध्यक्ष, हीरालाल पांच्या, प्रभाती लाल शिव नगरिया, कोषाध्यक्ष, जय नारायण चंदेल संयुक्त मंत्री, प्रभु दयाल रांई सह कोषाध्यक्ष, सूरजमल करवा, सूरजमल ठेकेदार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कैलाश चंद बैंनाडिया पूर्व सरपंच, शंकर लाल खडोलिया, मुकेश कुमार सैनी सरपंच खेजरोली, जगदीश प्रसाद सैनी जिला उपाध्यक्ष, कैलाश चंद सामरवाल रूड्डल, गुड्डू सैनी शाहपुरा, भंवर लाल पापटवान, रामचंद्र तूंदवाल, गोविंद नारायण सैनी पूर्व चेयरमैन, नानूराम सैनी पूर्व चेयरमैन, हनुमान सहाय सिंगोदिया, संतोष कुमार चांदोलिया, छीत्तरमल बबेरवाल, डॉ. मान प्रकाश तंवर, सुवालाल तूंदवाल, रमेश कुमार चांदोलिया, राम चन्द्र बीजवाडिया, डॉ. भगवान सहाय सैनी, डॉ ओ.पी.कटारिया ,मदनलाल सतरावला पूर्व अध्यक्ष, प्रहलाद सहाय अधोपिया पूर्व अध्यक्ष, जगदीश प्रसाद पांच्या, ओमप्रकाश नींदड़ वाले, भंवरलाल पापटवान सनसिटी, जगदीश प्रसाद सैनी जिला उपाध्यक्ष, नंछूराम बिश्नालिया अध्यक्ष भवन निर्माण समिति, गोपाल लाल सतरावला, सायर सिंह तंवर पार्षद, अर्जुनलाल सैनी पार्षद, धीरेंद्र सैनी पार्षद, गैंदीलाल जादम, कल्याण सहाय सैनी महार, बाबूलाल भभेवा, प्रभाती लाल ठेकेदार, रामेश्वर सिंगोदिया, मनोज सैनी, सुरेश कुमार तंवर सहित हजारों की तादाद में समाज बंधु मौजूद रहे।

बालाजी महाराज मंदिर मलिकपुर में हुआ संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ आयोजन

जयपुर (संस्कार सृजन)। ग्राम मलिकपुर में टीबडी वाले बालाजी महाराज मंदिर प्रांगण कुमावतों की ढाणी में सामुहिक संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ एवं कन्या प्रसादी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आगाज श्रीराम भक्त मण्डल ईटावा भोपजी ने श्री गणेश वन्दना एवं श्रीराम स्तुति द्वारा किया। इस अवसर पर एडवोकेट भंवर सिंह नाथावत, रामजीलाल शर्मा, हेमन्त शर्मा, गिरधारी लाल जांगिड, कालूराम बिराणिया, तोफान जांगिड, रामसहाय कुमावत, श्रवण योगी, रोहित, विशाल, मुंशीराम, विष्णु जांगिड, प्रभातीलाल कुमावत, चुन्नीलाल, हनुमान, घीसाराम, कन्हैया लाल, श्रवण कुमार, दामोदर, लालचंद, बाबूलाल, शंकर, अनिल, किशनलाल, सीताराम, ताराचंद, नाथूराम, छाजूराम, जगदीश, रामपाल, मोहन, राकेश, दिनेश, गणेश, रामजीलाल, मदन, भवानी शंकर, दीपचंद, महिलाएँ, बच्चे एवं समस्त कुमावत समाज व ग्रामीण उपस्थित रहे।

बार एसोसिएशन चौमूं ने किया राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ताओं का भव्य स्वागत

जयपुर (संस्कार सृजन)। विधानसभा क्षेत्र चौमूं में उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण व राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता पूनम चंद भंडारी के चौमूं आगमन पर बार एसोसिएशन चौमूं के अधिवक्ताओं ने भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर महासचिव महेश देव सैनी, पूर्व महासचिव पवन कुमार प्रजापति, पूर्व महासचिव कालूराम अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष धीरेंद्र सैनी, सुभाष दीक्षित, चरण सिंह चौधरी, नरेश मीणा, कैलाश सैनी, विक्रम, रामदेव चौधरी, सुरेश चौधरी, हंसा सैनी आदि बड़ी संख्या में अधिवक्ता बंधु उपस्थित रहे।

विराज फाउंडेशन की महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष बनी सुनीता शर्मा

चौमूं (संस्कार सृजन)। विराज फाउंडेशन की महिला प्रकोष्ठ प्रदेशाध्यक्ष मंजू शर्मा ने बापू बाजार चौमू निवासी सुनीता शर्मा के द्वारा महिला उत्थान व संरक्षण के विभिन्न कार्यों को देखते हुए विराज फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष पद पर नियुक्ति पत्र देकर नियुक्त किया। सुनीता शर्मा ने कहा कि मैं निष्ठा पूर्वक संगठन को संगठित करते हुए जनता की भलाई के लिए कार्य करती रहूंगी। शर्मा के पद ग्रहण करने पर शुभचिंतकों ने बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

संपादकीय

शिवराज सिंह चौहान का चुनाव लड़ रही हैं बहनें-भांजियां

लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें विदिशा से अपना प्रत्याशी बनाया है। भाजपा के लिए विदिशा सबसे सुरक्षित सीटों में से एक है। यहाँ यदि भाजपा का उम्मीदवार प्रचार करने न भी जाए, तो भारी अंतर से विजय उसके हिस्से आएगी। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है। मध्यप्रदेश में लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने का कीर्तिमान उनके नाम है। अपने कार्यकाल में उन्होंने जनता का अभूतपूर्व विश्वास कमाया है, जो सार्वजनिक तौर पर कई बार हमारे सामने आता है। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान उन्हें जिस प्रकार का स्नेह नागरिकों की ओर से मिल रहा है, वैसा कम ही देखने को मिलता है। विशेषकर माताओं-बहनों के साथ उनका आत्मीय संबंध बन गया है। मध्यप्रदेश की महिलाएं सच में उन्हें अपने भाई और लड़कियां उन्हें अपने मामा के तौर पर स्वीकार कर चुकी हैं। वे चुनाव प्रचार के लिए जहाँ भी जा रहे हैं, अनूठे नजारे दिखायी दे रहे हैं। महिलाएं चुनाव लड़ने के लिए उन्हें पैसे दे रही हैं। छोटी लड़कियां उन्हें अपनी गुल्लक भेंट कर रही हैं। बड़ी बहनें जिस तरह अपने घर आए भाई के हाथ में दस-बीस रुपये थमा देती हैं, वैसे ही नजारे शिवराज सिंह चौहान के चुनाव प्रचार में दिख रहे हैं। ये महिलाएं भी जानती हैं कि उनके दस-बीस रुपये से शिवराज सिंह चौहान का चुनाव खर्च नहीं निकलेगा और वे यह भी जानती हैं कि शिवराज अपना चुनाव लड़ने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम भी हैं। इसके बाद भी महिलाएं अपने शिवराज भैया के हाथ में 10, 20 या 50 रुपये थमा रही हैं, तो उसके पीछे भावनात्मक रिश्ता है। अपनत्व है। साफ दिखायी देता है कि शिवराज सिंह चौहान का चुनाव उनकी 'बहने और भांजियां' लड़ रही हैं। जब किसी नेता का चुनाव आम जनता लड़ती हुई दिखायी दे तो समझ लीजिए कि उसका राजनीतिक कद क्या होगा। अपनी बहनों-भांजियों से भेंट पाकर शिवराज सिंह चौहान भी भावुक हो जाते हैं और कहते हैं कि जनता का यह प्रेम अद्भुत है, इस प्रेम के बदले तीनों लोक का सुख भी कहीं नहीं लगता। इस प्रेम को शीश झुकाकर प्रणाम करता हूं। मेरे बेटा-बेटी भी गुल्लक भेंट कर रहे हैं। मैं अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। स्मरण रहे कि विधानसभा चुनाव में शिवराज सिंह चौहान के कारण भाजपा को महिलाओं का एक तरफा वोट मिला है।

ऐसे करें हवन, नोट कर लें हवन विधि, शुभ मुहूर्त, मंत्र और सामग्री

हवन को सही विधि से करना आवश्यक है। हवन पूजन पंडित जी द्वारा कराई जाने पर शुभ और फलदायक मानी जाती है लेकिन आप खुद भी घर पर आसान विधि से हवन पूजन कर सकते हैं। आइए जानते हैं हवन पूजा का शुभ मुहूर्त, सम्पूर्ण विधि, मंत्र और सामग्री-

हवन विधि-सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर साफ-स्वच्छ वस्त्र पहनें। हवन कुंड को साफ कर लें। इसके बाद हवन के लिए साफ-सुथरे स्थान पर हवन कुंड स्थापित करें। पूजा शुरू करने से पहले भगवान गणेश का ध्यान करें। अब गंगाजल का छिड़काव कर सभी देवताओं का आव्हान करें। अब हवन कुंड में आम की लकड़ी, घी और कपूर से अग्नि प्रज्जवलित करें। ऊं आग्नेय नमः स्वाहा मंत्र बोलकर अग्नि देव का ध्यान करें। ऊं गणेशाय नमः स्वाहा मंत्र बोलकर अगली आहुति दें। इसके बाद नौ ग्रहों (ऊं नवग्रहाय नमः स्वाहा) और कुल देवता (ऊं कुल देवताय नमः स्वाहा) का ध्यान करें। इसके बाद हवन कुंड में सभी देवी-देवताओं के नाम की आहुति डालें। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हवनकुंड में कम से कम 108 बार आहुति डालनी चाहिए। अंत में बची हुई हवन सामग्री को एक पान के पत्ते पर एकत्रित कर, पूड़ी, हलवा, चना, सुपारी, लौंग आदि रख आहुति डालें। पूरी, हलवा, खीर या श्रद्धानुसार भोग लगाएं। आचवनी करें। क्षमा प्रार्थना करें। सभी को आरती दें और प्रसाद खिलाएं।

अमूल्य ज्ञान का बोध

✳ सोलह संस्कार

1.गर्भाधान संस्कार 2. पुंसवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार 4. जातकर्म संस्कार 5. नामकरण संस्कार 6.निष्क्रमण संस्कार 7. अन्नप्राशन संस्कार 8. मुंडन संस्कार 9. कर्णवेधन संस्कार 10. यज्ञोपवीत संस्कार 11. वेदारंभ संस्कार 12. केशांत संस्कार 13. समावर्तन संस्कार 14. विवाह संस्कार 15. सन्यास संस्कार 16. अन्त्येष्टि संस्कार

✳ अष्ट सिद्धि

1.अणिमा 2. महिमा 3. गरिमा 4. लघिमा . 5.प्राप्ति 6. प्राकाम्य 7. ईशित्व 8. वशित्व

✳ नव निधियां

1.पद्म निधि 2. महापद्म निधि 3. नील 4. मुकुंद निधि 5. नंद निधि 6.मकर निधि 7. कच्छप निधि 8. शंख निधि 9. खर्व निधि

✳ 27 नक्षत्र

1.आश्विन, 2.भरणी, 3.कृतिका, 4.रोहिणी, 5.मृगशिरा, 6.आर्द्रा 7.पुनर्वसु, 8.पुष्य, 9.आश्लेषा, 10.मघा, 11.पूर्वा फाल्गुनी, 12.उत्तरा फाल्गुनी, 13.हस्त, 14.चित्रा, 15.स्वाति, 16.विशाखा, 1।.अनुराधा, 18.ज्येष्ठा, 19.मूल, 20.पूर्वाषाढ़ा, 21.उत्तराषाढ़ा, 22.श्रवण, 23.धनिष्ठा, 24.शतभिषा, 25.पूर्वा भाद्रपद, 26.उत्तरा भाद्रपद और 27.रेवती

✳ 12 राशियाँ

1. मेष 2. वृषभ 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12.मीन

✳ नवग्रह

1.सूर्य 2.चंद्र 3.मंगल 4.बुध 5.बृहस्पति 6.शुक्र 7.शनि 8.राहू 9.केतु

✳ चार वेद

1.ऋग्वेद 2.यजुर्वेद 3.सामवेद 4.अथर्ववेद

✳ सप्त ऋषि

1.वशिष्ठ 2.विश्वामित्र 3.कण्व 4.भारद्वाज 5.अत्रि 6.वामदेव 7.शौनक

✳ 18 पुराण

1.ब्रह्म पुराण 2.पद्म पुराण 3.विष्णु पुराण 4. वायु पुराण (शिव पुराण)5.भागवत पुराण 6.नारद पुराण 7. मार्कण्डेय पुराण 8.अग्नि पुराण 9.भविष्य पुराण 10.ब्रह्मवैवर्त पुराण 11.लिंग पुराण 12.वाराह पुराण 13.स्कन्द पुराण 14.वामन पुराण 15.कूर्म पुराण 16.मत्स्य पुराण 17.गरुड पुराण 18.ब्रह्माण्ड पुराण

✳ सोलह श्रृंगार

1.बिंदी, 2. सिंदूर, 3. काजल, 4. मेहन्दी, 5. चूड़ियाँ, 6. मंगल सूत्र, 7. नथ, 8. गजरा, 9. मांग टीका, 10. झुमके, 11. बाजूबंद, 12. कमरबंद, 13. बिछिया, 14. पायल, 15. अंगूठी, 16. स्नान

बेडरूम में नहीं रखनी चाहिए ये 5 चीजें, होगा कलेश, बढ़ेगी नेगेटिविटी

वास्तु शास्त्र में घर से जुड़े कई नियम बताए गए हैं। कई बार हम जाने अनजाने में बेडरूम में कई ऐसी चीज रख देते हैं, जिससे घर की नकारात्मक ऊर्जा तो बढ़ती ही बढ़ती है साथ ही पति और पत्नी के बीच अनबन की भी स्थिति बढ़ जाती है। वास्तु में बेडरूम से जुड़े कुछ नियम बताए गए हैं। इसलिए घर की पॉजिटिव एनर्जी बढ़ाने और अपने रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए बेडरूम में कभी भी इन 5 चीजों को नहीं रखना चाहिए।

1- मुरझाए पौधे- घर में मुरझाए पौधे रखना शुभ नहीं माना जाता है। वहीं, बेडरूम में सूखे हुए काँटेदार पौधे नहीं रखना चाहिए। इससे घर में नेगेटिव एनर्जी प्रवेश करती है।

2- मृत लोगों की तस्वीर- वास्तु विद्या के अनुसार, बेडरूम में किसी भी मृत व्यक्ति की फोटो नहीं लगानी चाहिए। बेडरूम में मृत व्यक्ति की फोटो लगाने से पति और पत्नी के बीच तू तू मैं मैं की स्थिति उत्पन्न हो सकती है साथ ही नेगेटिविटी भी बढ़ सकती है।

3- बंद घड़ी- कभी भी दीवारों पर बंद घड़ी नहीं लगानी चाहिए। खासतौर पर सुबह उठने के बाद बंद घड़ी देखने से आपके भाग्य के दरवाजे पर भी ताल लग सकता है। घर के किसी भी कोने में बंद घड़ी रखना शुभ नहीं माना जाता है।

4- तस्वीरें- ज्यादातर लोग अपने घर को एस्थेटिक लुक देने के लिए तस्वीरें लगाते हैं। वहीं, घर में टूटी-फूटी या फटी हुई तस्वीर बिल्कुल भी नहीं लगानी चाहिए।

इससे घर-परिवार में कलह-क्लेश का माहौल बनता है। बेडरूम में युद्ध की तस्वीर लगाने से पति-पत्नी के बीच झगड़ा बढ़ सकता है। वहीं, उदास चेहरे वाली तस्वीर भी बेडरूम में नहीं लगानी चाहिए। इससे नेगेटिव एनर्जी बढ़ती है।

5- दिशा- घर की दिशा भी काफी महत्व रखती है। वहीं, बेडरूम को हमेशा उत्तर या उत्तर पश्चिम दिशा में ही बनवाना चाहिए। ऐसा करने से पति-पत्नी के बीच का बंद स्ट्रांग होता है।

भगवान राम के बारे में सुनी-अनसुनी कथाएं

भगवान विष्णु के अवतार श्री राम का नाम कौन नहीं जानता है। रामायण महाकाव्य के रचयिता महर्षि वाल्मीकि ने अपने ग्रंथ में लिखा है कि भगवान श्री राम में वैदिक सनातन धर्म की आत्मा कहे जाने वाले सभी गुण विद्यमान है। भगवान राम को पुरुषों में सबसे उत्तम पुरुष अर्थात् मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है।

भगवान श्री राम का जीवन परिचय-त्रेतायुग में जन्में भगवान श्री राम अयोध्या के महाराज दशरथ के सबसे बड़े पुत्र थे। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न राम के भाई थे। भगवान राम की मां कौशल्या थी और शेष सुमित्रा और कैकयी के पुत्र थे। भगवान राम का विवाह मिथिला नरेश राजा जनक की पुत्री सीता के साथ हुआ था।लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला, शत्रुघ्न की पत्नी श्रुतकीर्ति और भरत की पत्नी मांडवी थी। विवाह के पश्चात् भगवान राम को राजा दशरथ ने रानी कैकयी के कहने पर 14 वर्ष के लिए वनवास पर भेज दिया था क्योंकि एक वचन के अनुसार कैकेयी राजा दशरथ से कुछ भी मांग सकती थी तो रानी कैकेयी ने दासी मंथरा के उकसाने पर भरत को अयोध्या का राजा बनाने और राम को वनवास देने की इच्छा जताई और पिता की आज्ञा का पालन करके भगवान राम सीता और लक्ष्मण के साथ वन की ओर चले गए।

भगवान श्री राम का महत्व- ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश में से भगवान विष्णु ने संसार की भलाई के लिए कई अवतार लिए हैं। भगवान विष्णु द्वारा कुल 10 अवतार लिए गए जिसमें से भगवान राम सातवें अवतार माने जाते हैं और यह अवतार भगवान विष्णु के सभी अवतारों में से सबसे ज्यादा पूज्यनीय माना जाता है।भगवान श्री राम के बारे में महर्षि वाल्मीकि द्वारा अनेक कथाएं लिखी गई हैं। वाल्मीकि के अलावा प्रसिद्ध महाकवि तुलसीदास ने भी श्री राम के महत्व को लोगों को समझाया है।

भगवान राम ने कई ऐसे महान कार्य किए हैं जिसने हिन्दू धर्म को एक गौरवमयी इतिहास प्रदान किया है। भगवान विष्णु ने राम बनकर असुरों का संहार करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया। भगवान श्री राम ने मातृ-पितृ भक्ति के चलते अपने पिता राजा दशरथ के एक आदेश पर 14 वर्ष तक वनवास काटा। नैतिकता, वीरता, कर्तव्यपरायणता के जो उदाहरण भगवान राम ने प्रस्तुत किए वह बाद में मानव जीवन के लिए मार्गदर्शक बन गए।

एक कुशल और प्रजा हितकारी राजा थे राम- भगवान राम अपनी प्रजा को हर तरह से सुखी रखना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि जिस राजा के शासन में प्रजा दुखी रहती है, वह राजा नरक भोगी होता है। महाकवि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस् में रामराज्य की विशद चर्चा की है। माना जाता है कि अयोध्या में ग्यारह हजार वर्षों तक भगवान राम का दिव्य शासन रहा।

आदिवासियों के भगवान श्री राम-वनवास के दौरान भगवान श्री राम ने देश के सभी आदिवासियों और दलितों को संगठित करने का कार्य किया और उनको जीवन जीने की शिक्षा दी। उन्होंने देश के सभी संतों और उनके आश्रमों को राक्षसों, दैत्यों के आतंक से बचाया था। अपने 14 वर्ष के वनवास के दौरान भगवान राम ने भारत की सभी जातियों और संप्रदायों को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया। चित्रकूट में रहकर भी उन्होंने धर्म और कर्म की शिक्षा दीक्षा ली। भगवान राम ने भारत भर में भ्रमण कर भारतीय आदिवासी, जनजाति, पहाड़ी और समुद्री लोगों के बीच सत्य, प्रेम, मर्यादा और सेवा का संदेश फैलाया और यही कारण था कि राम का जब रावण से युद्ध हुआ तो सभी तरह की अनार्य जातियों ने राम का साथ दिया।

भगवान राम की वापसी-भगवान श्री राम कहते है कि पृथ्वी लोक एक ऐसा लोक है जहां जो भी आता है उसे एक दिन वापस लौटना ही होता है। ठीक इसी तरह श्री राम भी अपना मानवीय रूप त्याग कर अपने वास्तविक स्वरूप विष्णु का रूप धारण कर बैकुंठ धाम की ओर चले गए।

भगवान राम के बारे में सुने-अनसुने किस्से

1. वनवास के समय भगवान राम 27 साल के थे।
2. लव और कुश राम तथा सीता के दो जुड़वां बेटे थे।
3. राम-रावण युद्ध के समय इंद्र देवता ने भगवान श्री राम के लिए दिव्य रथ भेजा था।
4. भगवान श्री राम ने पृथ्वी पर 10 हजार से भी अधिक वर्षों तक राज किया।
5. भगवान राम का जन्म चैत्र नवमी में हुआ था जिसको भारतवर्ष में रामनवमी के रूप में मनाया जाता है।
6. भगवान राम ने रावण को मारने के बाद रावण के ही छोटे भाई विभीषण को लंका का राजा बना दिया था।
7. गौतम ऋषि ने अपनी पत्नी अहिल्या को पत्थर बनने का श्राप दिया था और इस श्राप से भगवान राम ने ही उन्हें मुक्ति दिलाई थी।
8. अरण्य नाम के एक राजा ने रावण को श्राप दिया था कि मेरे वंश से उत्पन्न युवक तेरी मृत्यु का कारण बनेगा और भगवान राम इन्हीं के वंश में जन्मे थे।
9. माता सीता को रावण की कैद से आजाद कराने के लिए रास्ते में पड़े समुद्र को पार करने के लिए भगवान राम ने एकादशी का व्रत किया था।
10. वनवास वापसी के बाद भगवान राम के अयोध्या वापसी की खुशी में अयोध्यावासियों ने दीप जलाए थे तब से दिवाली का त्योहार मनाया जाता है।

धर्म दर्शन

पाक्षिक राशिफल

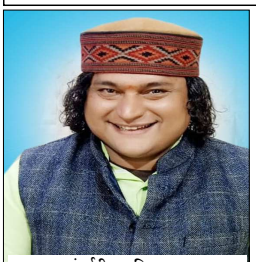

अंतर्राष्ट्रीय भविष्यवक्ता
पंडित रविन्द्राचार्य

मेष - सितारों की चाल किसी भी धर्म और दान के कार्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण होगी। कार्यों को पूरा करने के लिए मन उत्साहित रहेगा। तय समय में काम पूरा करने में महत्वपूर्ण प्रगति के अवसर मिलेंगे। प्रेम संबंधों में प्रेम के पल आ सकते हैं। लेकिन संतान पक्ष को लेकर कुछ चिंतित रहेंगे।

वृषभ - संबंधित क्षेत्रों में निरंतर प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे। मन में कदम-कदम पर उत्साह बना रहेगा। लेकिन संतान पक्ष को लेकर कुछ चिंतित रहेंगे। आपको कहीं यात्रा और प्रवास के सिलसिले में जाना होगा। पूंजी निवेश से सकारात्मक माहौल बनाया जा सकता है।

मिथुन - आजीविका के क्षेत्रों में कदम-कदम पर सफलता मिलेगी। आपको मनचाही सफलता मिलेगी। फिल्म निर्माण, अनुसंधान, कला, प्रबंधन, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा से संबंधित क्षेत्र में अवसर मिलेंगे । सिविल और प्रतियोगी परीक्षाओं में अपना भाग्य आजमा सकते हैं । सितारों की चाल सुखद और अद्भुत परिणामों की सौगात देगी। लेकिन एहतियात की जरूरत होगी।

कर्क - आपको ग्रहों की चाल सुखद परिणाम प्रदान करेगी। कुछ बड़ी योजनाएं आपके हाथ लग सकती हैं। अगर आप किसी जमीन जायदाद की खरीदारी में लगे हैं तो मनचाही तरक्की के अवसर मिलेंगे। खान-पान पर पूरा ध्यान दें। कुछ विरोधी सक्रिय हो सकते हैं। इसलिए धैर्य और विश्वास बनाए रखें।

सिंह -आपको अपनी आजीविका के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा और प्रवास पर जाना होगा। लाभांश से पूंजी निवेश में वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य पहले से कुछ कमजोर रहेगा। दांपत्य जीवन के आंगन में हंसी-खुशी के पल आएंगे। अचल संपत्ति में विवाद के कारण आप कुछ परेशान रहेंगे। हालांकि कोर्ट कचहरी के मामलों में निरंतर प्रगति के अवसर मिलेंगे।

कन्या - दांपत्य जीवन के आंगन में हंसी-खुशी के पल रहेंगे । धन कमाने और जुटाने के प्रयासों को काफी सफलता का उपहार मिलेगा। सितारों की चाल आर्थिक संदर्भ को प्रगाढ़ करने के अवसर देगी। कानूनी मामलों को पूरा करने में अधिक समय लग सकता है।

तुला - मन को प्रसन्न रखना, अच्छा सोचना और पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना आपके स्वास्थ्य के लिए सुखद और अद्भुत रहेगा। रोजी-रोटी से जुड़े कार्यों को पूरा करने में निरंतर प्रगति का दौर रहेगा। अगर कोई पैसों का लेन-देन है, तो उसे निपटाने में निरंतर प्रगति का दौर रहेगा।

वृश्चिक - श्रेष्ठ सोच आपको सुखद परिणाम देगी। साथ ही रचनात्मक कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कारगर साबित होंगे । मनोरंजन के सिलसिले में आपको दूर-दराज के इलाकों की यात्रा करनी पड़ेगी। रचनात्मक कार्यों में रुचि जागृत होगी। घर, परिवार और समाज में व्यवहार बेहतर रहेगा। पूंजी निवेश में लाभ होगा।

धनु - आपको मार्केट की मांग और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेन होगा । स्वास्थ्य के मामले में कुछ परेशान रहेंगे। माता-पिता व परिजनों का सहयोग मिलेगा । प्रेम संबंधों में समझदारी से चलने की जरूरत होगी। संतान पक्ष से लाभ के अवसर मिलेंगे।

मकर- आपके सितारे राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों से निपटने के मामले में सुखद रहेंगे। घर परिवार के बीच चल रहे तनाव को काफी हद तक कम होगा। धार्मिक व वैवाहिक कार्य को अंतिम रूप देने की मंशा फलीभूत होगी। विद्यार्थियों के लिए यह सप्ताह बहुत ही शानदार रहेगा।

कुंभ - पूर्व में कोई रोग या परेशानी है तो उसे दूर करने में आप सफल हो सकते

हैं। दांपत्य जीवन सुखद और अद्भुत रहेगा। अगर आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो सितारों की चाल मनचाहा परिणाम देगी। आजीविका से जुड़े मामले हों या व्यवसाय को उन्नत करने की जिज्ञासा, निरंतर लाभांश मिलेगा।

मीन - सितारों की चाल आपको पढ़ाई और अध्यापन से संबंधित पहलुओं में महारत हासिल करने के अवसर देगी। आप फिल्म, अभिनय, कला, संगीत और चिकित्सा के क्षेत्र में हैं, तो आपको वांछित परिणाम पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। हालांकि धन संबंधी मामलों में खर्चा अधिक रहेगा। लेकिन अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता होगी। आप जमीन-जायदाद से जुड़े किसी काम को निपटाने में सफल रहेंगे।

ओशो ने बताया किस तरह आदमी बेईमान शब्दों से चलाता है अपना काम

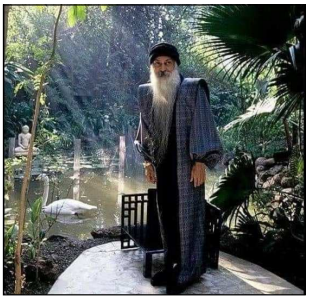

वैराग्य का अर्थ, जहां न राग रह गया, न विराग रह गया। जहां न किसी चीज का आकर्षण है, न विकर्षण है। न किसी चीज के प्रति खिंचाव है, न विपरीत भागना है। जहां न किसी चीज का बुलावा है, न विरोध है। जहां व्यक्ति थिर हुआ, सम हुआ, जहां पक्ष और विपक्ष एक से हो गए, वहां वैराग्य फलित होता है। लेकिन इसे विराग या वैराग्य क्यों कहते हैं? जहां वैराग्य भी नहीं है, वहां वैराग्य क्यों कहते हैं? क्योंकि कोई उपाय नहीं है। शब्द की मजबूरी है, और कोई बात नहीं है। आदमी के पास सभी शब्द द्वंद्वात्मक हैं, डायलेक्टिकल हैं। आदमी की भाषा में ऐसा शब्द नहीं है जो नॉन-डायलेक्टिकल हो, द्वंद्वात्मक न हो। मनुष्य ने जो भाषा बनाई है, वह मन से बनाई है। मन द्वंद्व है। इसलिए मनुष्य जो भी भाषा बनाता है, उसमें विपरीत शब्दों में भाषा को निर्मित करता है। मजे की बात है कि हमारी भाषा बन ही नहीं सकती विपरीत के बिना। क्योंकि बिना विपरीत के हम परिभाषा नहीं कर सकते। अगर कोई आपसे पूछे कि अंधेरा यानी क्या? तो आप कहते हैं, जो प्रकाश नहीं है। कोई पूछे, प्रकाश क्या? तो आप कहते हैं, जो अंधेरा नहीं है। न आपको अंधेरे का पता है कि क्या है, न प्रकाश का पता है कि क्या है? अंधेरे को जब पूछते हैं, तो कह देते हैं, प्रकाश नहीं है। जब पूछते हैं, प्रकाश क्या है? तो कह देते है, अंधेरा नहीं है। यह कोई परिभाषा हुई? परिभाषा तो तभी हो सकती है, जब कम से कम एक का तो पता हो! एक आदमी एक अजनबी गांव में गया। उसने पूछा कि अ नाम का आदमी कहां रहता है? तो लोगों ने कहा, ब नाम के आदमी के पड़ोस में। पर उसने कहा, मुझे ब का भी कोई पता नहीं, ब कहां रहता है? उन्होंने कहा, अ के पड़ोस में। ऐसे ही आदमी से पूछो, चेतना क्या है? वह कहता है, जो पदार्थ नहीं है। उससे पूछो, पदार्थ क्या है? वह कहता है, जो चेतना नहीं। माइंड क्या है? मैटर नहीं। मैटर क्या है? माइंड नहीं। बड़े से बड़ा दार्शनिक भी इसको परिभाषा कहता है। यह डेफिनिशन हुई? यह तो धोखा हुआ, डिसेप्शन हुआ-परिभाषा न हुई। क्योंकि इसमें से एक का भी पता नहीं है। आदमी को कुछ भी पता नहीं है, लेकिन काम तो चलाना पड़ेगा। इसलिए आदमी बेईमान शब्दों को रखकर काम चलाता है। उसके सब शब्द डिसेप्टिव हैं। उसके किसी शब्द में कोई भी अर्थ नहीं है। क्योंकि अपने शब्द में वह जिस शब्द से अर्थ बताता है, उस शब्द में भी उसको कोई अर्थ पता नहीं है। उसकी सब परिभाषाएं सर्कुलर हैं, वर्तुलाकार हैं। वह कहता है, बाएं यानी क्या? वह कहता है, जो दाएं नहीं है। और दाएं? वह कहता है, जो बाएं नहीं है। लेकिन इनमें से किसी को पता है कि बायां क्या है? यह आदमी की भाषा डायलेक्टिकल है। डायलेक्टिकल का मतलब यह कि जब आप पूछें अ क्या, तो वह ब की बात करता है। जब पूछें ब क्या, तो वह अ की बात करने लगता है। इससे भ्रम पैदा होता है कि सब पता है। पता कुछ भी नहीं है, सिर्फ शब्द पता हैं। लेकिन बिना शब्दों के काम नहीं चल सकता। राग है तो विराग है। लेकिन तीसरा शब्द कहां से लाएं? और तीसरा शब्द ही सत्य है। वह कहां से लाएं?

(कहानी)डिस्नी सिंड्रेला

एक समय की बात है। किसी राज्य में एक व्यापारी रहा करता था। उस व्यापारी की एक छोटी सी बेटी थी, जिसका नाम था एला। एला बहुत ही प्यारी और नेक बच्ची थी। उसके पिता उससे बहुत प्यार करते थे और उसकी सारी ज़रूरतें पूरी करते थे। लेकिन एला की ज़िन्दगी में एक चीज़ की कमी थी वह थी, उसकी माँ जो उसे छोड़ कर भगवान् के घर चली गयी थी। एला की इस कमी को पूरा करने के लिए उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। एला की नयी माँ की दो बेटियाँ थी। वह बहुत खुश थी कि माँ के साथ साथ उसे बहने भी मिल गयी थी। दोनों बहने बहुत घमंडी थी, लेकिन एला उनसे प्यार करती थी और अपनी नयी माँ को भी बहुत चाहती थी। एला की खुशियाँ ज़्यादा दिन टिक नहीं पायीं। एक दिन जब उसके पिता अपने काम से किसी दूसरे शहर गए, तो फिर कभी वापस नहीं आये। एला पर तो मानो मुश्किलों का पहाड़ टूट गया हो। पिता का साया सर से उठते ही उसकी माँ और बहने उसके घर की मालकिन हो गई और एला के साथ नौकरों जैसा बर्ताव करने लगीं। उन्होंने घर के सारे नौकरों को निकाल दिया और अब एला ही घर का सारा काम करती। उसकी बहनो ने तो उसका कमरा भी उससे छीन लिया और उसे एक कोठरी में रहने के लिए छोड़ दिया। एला अपनी बहनों के पुराने कपड़े और जूते पहनती। सारा दिन उनके काम करती। कभी कभी तो एला इतनी थक जाती कि अंगीठी के पास ही सो जाती। अकसर एला जब सुबह उठती तो अंगीठी की राख (सिंडर) उस पर पड़ी होती। उसकी बहने उसे सिंडर-एला कह के चिढ़ाती और इस तरह उसका नाम एला से सिंडरेला हो गया। एक दिन राज्य में ऐलान हुआ कि महल में एक बहुत बड़ा आयोजन है और राज्य की सभी लड़कियों की बुलाया गया है ताकि राजकुमार अपनी पसंद की लड़की से शादी कर सके। राज्य की सारी लड़कियां बहुत खुश और उत्साहित थीं। सिंड्रेला और उसकी बहने भी अपनी किस्मत आज़माने को बेचैन थी। लेकिन फिर सिंड्रेला की ये खुशी उसकी सौतेली माँ को रास नहीं आई और उसने सिंड्रेला को महल में जाने से मना कर दिया। बेचारी सिंड्रेला दुखी मन से फिर अपने काम में लग गयी और सोचती रही, कि इस वक़्त उसकी बहने क्या कर रही होंगी और राजकुमार देखने में कैसा होगा। सिंड्रेला जब इन खयालो में खोई हुई थी, तभी वहां एक जादूगरनी आई। उसने सिंड्रेला को दुखी देखा तो उसकी मदद करनी चाही। सिंड्रेला ने सारी बात जादूगरनी को बताई। जादूगरनी ने सिंड्रेला से कहा, ओह! प्यारी सिंड्रेला, मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ। यह कह कर जादूगरनी ने अपनी छड़ी घुमाई और वहाँ पड़े एक बड़े से कद्दू को एक बग्घी मे बदल दिया। वहीं चार चूहे उछल कूद मचा रहे थे, जादूगरनी की नज़र उन पर पड़ी तो उसने चूहों को घोड़ा बना दिया। अब जरूरत थी एक कोचवान की। जादूगरनी ने चारों तरफ नज़र घुमाई तो उसे एक मेंढक दिखा और उसे कोचवान में बदल दिया। सिंड्रेला यह सब देख हैरान हो रही थी कि तभी जादूगरनी उसकी तरफ मुड़ी और अपनी जादू की छड़ी घुमा दी, और पलक झपकते ही सिंड्रेला के मटमैले और फटे हुए कपड़े साफ और सुंदर हो गए। उसके पैरों में टूटी हुई चप्पल की जगह सुंदर कांच की जूती आ गई। अब सिंड्रेला महल मे जाने के लिए तैयार थी। जादूगरनी ने सिंड्रेला को विदा करते हुए कहा, बेटी, तू अपनी इच्छा पूरी कर ले, लेकिन याद रखना रात 12 बजते ही यह सारा जादू खत्म हो जाएगा। सिंड्रेला जब महल पहुंची तो सबकी नज़रे उसी को देखने लगी। वह बहुत ही सुंदर लग रही थी। राजकुमार ने जब उसके साथ डांस करना चाहा तो सिंड्रेला की सौतेली बहनों के साथ साथ वहां मौजूद सभी लड़कियाँ सिंड्रेला से जलने लगीं। लेकिन कोई सिंड्रेला को पहचान नही पाया। राजकुमार ने उसे देखते ही फैसला कर लिया था कि वह इसी लड़की से शादी करेगा। सिंड्रेला भी राजकुमार की आँखों में ऐसी डूबी कि उसे जादूगरनी की बात याद ही नही रही। देखते ही देखते 12 बज गए। घंटी बजते ही सिंड्रेला को याद

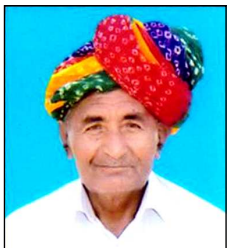

प्रभाती लाल सैनी

अया कि 12 बजे जादू खत्म हो जाना था। सिंड्रेला बिना राजकुमार से कुछ कहे वहाँ से भाग निकली। वह नही चाहती थी कि राजकुमार उसे उसके पुराने, गंदे कपड़ो मे देखे और उससे नफरत करे। भागते वक्त सिंड्रेला की कांच की एक जूती महल में ही छूट गयी जो राजकुमार ने उठा ली। राजकुमार ने बहुत कोशिश की सिंड्रेला को ढूँढने की लेकिन वह उसे कहीं नही मिली। सबने राजकुमार से उसे भूल जाने को कहा लेकिन राजकुमार सिंड्रेला को भूल नही पा रहा था। आखिरकार सारे राज्य मे ऐलान हुआ कि जिस लड़की के पैरों मे वह जूती आएगी राजकुमार उसी से शादी करेंगे। राज्य मे तो जैसे तूफान आ गया था। हर लड़की राजकुमार से शादी करना चाहती थी। सभी लड़किया अपने आप को उस कांच की जूती की मालकिन बताने लगी। लड़कियों के घर जा जा कर उन्हें जूती पहनाई गयी लेकिन उनमें से किसी को भी वह पूरी नही आई। आखिर में सिंड्रेला की बहनों की बारी आई। दोनो ने हर कोशिश की जूती पहनने की लेकिन कोई फायदा नही हुआ। अब सबकी नज़रे सिंड्रेला पर रुक गयीं। सिंड्रेला ने जब उसे पहना तो वह जूती उसके पैर मे आ गयी जैसे उसी के लिए बनी हो। सिंड्रेला की सौतेली माँ और बहने हैरान और परेशान हो गयीं। किसी को भी उम्मीद नही थी कि वह सुंदर लड़की सिंड्रेला हो सकती है। राजकुमार ने जब सिंड्रेला से शादी के लिए पूछा तो सिंड्रेला ने खुशी खुशी हाँ कर दी। अगले ही दिन बड़ी धूम धाम के साथ सिंड्रेला की शादी राजकुमार से हो गयी। राजकुमार और सिंड्रेला एक दूसरे के साथ बहुत खुश थे और एक दूसरे को बहुत चाहते थे। दूसरी तरफ सिंड्रेला की सौतेली माँ और बहनों को सिंड्रेला के साथ बुरा व्यवहार करने की सज़ा के रूप मे राज्य छोड़ कर जाना पड़ा।

जिसने भगवान विष्णु के इन पचपन नामों का जप कर लिया समझो उसको अक्षय पुण्य मिल गया

जो मनुष्य भगवान विष्णु के निम्नांकित पचपन नामों का जप करता है, वह मंत्रजप आदि के फल का भागी होता है तथा तीर्थों में पूजनादि के अक्षय पुण्य को प्राप्त करता है। पुष्कर में पुण्डरीकाक्ष, गया में गदाधर, चित्रकूट में राघव, प्रभास में दैत्यसूदन, जयन्ती में जय, हस्तिनापुर में जयन्त, वर्धमान में वाराह, काश्मीर में चक्रपाणि, कुब्जाभ्र में जनार्दन, मथुरा में केशवदेव, कुब्जाम्रक में हृषीकेश, गंगाद्वार में जटाधर, शालग्राम में महायोग, गोवर्धनगिरि पर हरि, पिण्डारक में चतुर्बाहु, शंखोद्धार में शंखी, कुरुक्षेत्र में वामन, यमुना में त्रिविक्रम, शोणतीर्थ में विश्वेश्वर, पूर्वसागर में कपिल, महासागर में विष्णु, गंगासागर संगम में वनमाल, किष्किन्धा में रैवतकदेव, काशीतट में महायोग, विरजा में रिपुंजय, विशाखयूप में अजित, नेपाल में लोकभावन, द्वारका में कृष्ण, मन्दराचल में मधुसूदन, लोकाकुल में रिपुहर, शालग्राम में हरि का स्मरण करें।

पुरुषवट में पुरुष, विमलतीर्थ में जगत्प्रभु, सैन्धवारण्य में अनन्त, दण्डकारण्य में शार्ंगधारी, उत्पलवर्तक में शौरि, नर्मदा में श्रीपति, रैवतकगिरि पर दामोद, नन्दा में जलशायी, सिन्धुसागर में गोपीश्वर, माहेन्द्रतीर्थ में अच्युत, सह्याद्रि पर देव देवेश्वर, मागधवन में बैकुण्ठ, विन्ध्यगिरि पर सर्वपापहारी और हृदय में आत्मा विराजमान हैं। ये अपने नाम का जप करने वाले साधकों को भोग तथा मोक्ष देने वाले हैं। प्रत्येक वटवृक्ष पर कुबेर का, प्रत्येक चौराहे पर शिव का, प्रत्येक पर्वत पर राम का तथा सर्वत्र मधुसूदन का स्मरण करें। धरती और आकाश में नरका, वसिष्ठती में गरुडध्वज का तथा सर्वत्र भगवान वासुदेव का स्मरण करने वाला पुरुष भोग एवं मोक्ष का भागी होता है। भगवान विष्णु के इन नामों का जप करके मनुष्य सब कुछ पा सकता है। उपर्युक्त क्षेत्र में जो जप, श्राद्ध, दान और तर्पण किया जाता है, वह सब कोटिगुना हो जाता है।

उत्तर पश्चिम रेलवे मजदूर संघ द्वारा धूमधाम से मनाई गई डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती

जयपुर (संस्कार सृजन)। जयपुर में उत्तर पश्चिम रेलवे मजदूर संघ जयपुर मण्डल के प्रधान कार्यालय में डॉ भीमराव अंबेडकर जी की 133 वी जयंती बड़े धूमधाम से मनाई गई कार्यक्रम की शुरुआत बाबा साहेब के चित्र के सामने दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित कर की गई। इस दौरान उत्तर पश्चिम रेलवे के मंडल अध्यक्ष सौरभ दीक्षित ने बोला कि डॉ भीमराव अंबेडकर जी को असली मायने में सम्मान तब दिया जाए जब देश का बच्चा बच्चा शिक्षित हो जाएगा ओर हर भारतीय उनके दिए सविंधान के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा रख कर उसके अनुसार जीवन जीने की सोच रखेगा।

शिक्षा ही असली शेरनी का दूध है एक वक्त का खाना कम खा ले लेकिन अपने बच्चो को जरूर पढ़ाये। डॉ भीमराव अंबेडकर जी उस समय की कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी 30 से अधिक विषयो में मास्टर डिग्री हासिल की ओर 03 विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि हासिल कर यह साबित किया कि लक्ष्य ओर उधेश्य के आगे कुछ भी नामुमकिन नही है तो हमे भी लक्ष्य ओर उधेश्य को मध्यनजर रखते हुए हर मुश्किल से सामना करते हुए कठिन परिश्रम करना चाहिए। मंडल मंत्री महेश शर्मा ने बताया कि डॉ आंबेडकर एक महामानव थे और उन्होंने भारत देश को जितना दिया उसका गुणगान करना बहुत ही कठिन है बाबा साहेब ने अपने जीवन को बहुत ही स्वाभिमान से जिया ओर अपने जीवन मे बहुत संघर्ष करते हुए भारत देश को सविंधान दिया।

आल इंडिया एस सी एस टी एम्प्लाइज एसोसिएशन के जोनल पदाधिकारी घासीराम नरेडिया ने बताया कि डॉ अम्बेडकर ने हर वर्ग के उत्थान के लिए बहुत किया है वो एक बहुत ही शिक्षत मानव थे बाबा साहेब ने युवा वर्ग महिला वर्ग श्रमिक वर्ग आदि के उत्थान के लिए सविधान में प्रावधान कर बाबा साहेब हम सब के लिए पूजनीय बन गए। मंडल कोषाध्यक्ष रामबाबू गौतम ने बाबा साहेब के जीवन पर प्रकाश डाला और बाबा साहेब की जीवनी का वर्णन करते हुए बाबा साहेब के संघर्षों के बारे में बताया डॉ भीमराव अंबेडकर की स्कूली शिक्षा से लेकर भारत के प्रथम कानून मंत्री तक के सफर पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर उत्तर पश्चिम रेलवे मजदूर संघ के मण्डल अध्यक्ष सौरभ दीक्षित, मण्डल मंत्री महेश शर्मा, मण्डल पदाधिकारी मोहन पुनिया, दीपक वर्मा, अनवर हुसैन, याकत अली, नीलम जाटव, सुधीर उपाध्याय, अनिल चौधरी, भुर सिंह मीणा ,राजेश मीना, जयसिंह मीना ,संदीप महलां ,रविन्द्र दाधीच ,नरेंद्र खेड़िया ,राजेन्द्र मीना, मोहम्मद फिरोज, सोहन मीना, आदित्य दीक्षित ,भरत वैष्णव, जीताराम, नीरज मीना, महेश शर्मा, देवेंद्र सिंह चौहान सहित ऑल इंडिया एससी एसटी एम्प्लाइज एसोसिएशन के जोनल पदाधिकारी घासीराम नरेडिया ,रामबाबू गौतम, मंडल मंत्री सीडी

एसएस जैन सुबोध कॉलेज के स्वयंसेवकों ने पक्षियों के लिए लगाए परिंडे

जयपुर (संस्कार सृजन)। एसएस जैन सुबोध पीजी महाविद्यालय जयपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवको ने राधा रानी फाउंडेशन के साथ मिलकर डॉ. विशाल गौतम (कार्यक्रम अधिकारी),जितेंद्र धाकड़ (अध्यक्ष),अमोलक बैरवा(उपाध्यक्ष) एवँ रितिका मीणा (महासचिव) के निर्देशन में पक्षी मित्र अभियान से जुड़कर राजस्थान जन मंच पक्षी चिकित्साल के सहयोग से गर्मियों की शुरुआत के साथ ही प्यासे पक्षियों की सहायता हेतु झालाना लैपर्ड सेंचुरी एवँ काली माता मंदिर परिसर में 51 परिंडे लगाकर परिंडा महोत्सव की शुरुआत की इस अभियान के तहत पुरी गर्मियों में अलग-अलग स्थानो पर लगभग 500 परिंडे लगाकर उनकी देखभाल का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एस पी भटनागर (क्षेत्रीय निदेशक एन एस एस राजस्थान), कमल लोचन (सचिव,राजस्थान जंन मंच) डॉ. पवन शर्मा,डॉ. राजेंद्र प्रसाद मीणा,डॉ. राधा कृष्ण एवँ डॉ. सुधीर वर्मा उपस्थित रहे । शिविर में सोनिया मीणा,अक्षय कुमार मौर्य,शुभम पारीक के साथ सभी स्वयंसेवको का योगदान रहा।

जयपुर में आरएमएस कार्मिकों ने अपनी मांगों को लेकर किया धरना प्रदर्शन

जयपुर (संस्कार सृजन)। जयपुर समेत रेल डाक सेवा के कर्मचारियों में आरएमएस की विभिन्न मांगों को लेकर चीफ पोस्ट मास्टर जनरल के खिलाफ सभी यूनियन एकजुट होकर विरोध प्रदर्शन में उतर आई है। सभी यूनियनों में काली पट्टी बांधकर के कार्यालय में प्रदर्शन किया। पूरे प्रदेश में रेल डाक सेवा कार्यालय के बाहर डेमोंसट्रेशन का कार्यक्रम किया। मंडल स्तर पर धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया । अगर इन कर्मचारियों की बात को नहीं सुना गया तो परिमंडल कार्यालय के बाहर राजस्थान के डाक प्रशासनिक कार्यालय पर पूरे दिन धरना प्रदर्शन करेंगे। प्रदर्शन करने वालों में बी. के. अवस्थी, मोहनलाल चेची, बलराम शर्मा, इंद्रराज सिंह मीणा, हरीश बाबु और अन्य सभी सदस्य मौजूद रहे।

नरेन्द्र सैनी महात्मा ज्योतिबा फुले अवार्ड और पिंकी सैनी सावत्री बाई फुले अवार्ड से सम्मानित

जयपुर (संस्कार सृजन)। महात्मा ज्योतिबा फुले की 197वीं जयंती के अवसर पर राज्य स्तरीय महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती समारोह महात्मा ज्योतिबा फुले राष्ट्रीय संस्थान विद्याधरनगर जयपुर मे आयोजन हुआ। आयोजित समारोह में देश-विदेश से आए समाजसेवियों प्रतिभाओं को महात्मा ज्योतिबा फुले, ज्ञान ज्योति सावित्रीबाई फुले, ताराचंद चंदेल, केएल सैनी अवार्ड दिया गया।

इस अवसर पर समाजसेवा के कार्यो मे नारायणपुर उपखण्ड छेत्र से गाँव लीलामंडा निवासी नरेन्द्र सैनी नर्सेज जिला अध्यक्ष अलवर एवं उनकी धर्मपत्नी वरिष्ठ अध्यापिका पिंकी सैनी को सावत्री बाई फुले अवार्ड 2024 एवं महात्मा ज्योतिबा फुले अवार्ड 2024 से शॉल ओढ़ाकर एवं अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। नरेन्द्र सैनी के पिता बनवारी लाल सैनी किसान है इन्होने बताया की इनके दोनों बेटे एवं बड़ी पुत्रवधू सरकारी सेवा में है।

इस मौके पर ओंकारमल सैनी रिटायर्ड RAS ने महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले के जीवनकार्यों के संबंध में प्रश्नोत्तरी से जवाब मांगे। समारोह में क्रीड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल सैनी,पूर्व विधायक भगवान सहाय सैनी, एडवोकेट अनुभव चंदेल, महामंत्री पूनमचंद कच्छावा, संस्था के कोषाध्यक्ष भागचंद सैनी, सोनू सैनी सहित अनेक समाज बंधु उपस्थिति रहे। सम्मानित होने पर व्याख्याता हितेश सैनी ने हर्ष जताया।

सामोद ग्राम में शाही लवाजमे के साथ निकली बूढ़ी गणगौर की सवारी

चौमूं (संस्कार सृजन)। गणगौर माता की सवारी शाही लवाजमे के साथ सामोद महल से निकाली गई। गणगौर की सवारी शाही लवाजमे के साथ मुख्य मार्गों से होते हुए रानी वाले चौक पहुंची। जहां मेले का आयोजन किया गया। नृसिंह मन्दिर महंत रामेश्वरदास ने गणगौर माता की पूजा करवाकर सामोद महल से रवाना किया। इस दौरान गणगौर की सवारी मुख्य मार्गों से होती हुई रानी वाले चौक स्थित गणगौरी चबूतरे पर विसर्जित हुई। गणगौर सवारी के साथ ऊंट, घोडे बैंड बाजा, शहनाई वादक आदि का लवाजमा चल रहा था। इस दौरान सरपंच बरजी देवी, पूर्व सरपंच भगवान सहाय गिरणा,गोपाल सैनी, प्रकाश सैनी, महेश यादव, गिरिराज कुमार, कमल यादव, रामावतार सैनी, बंशीधर कपूरिया सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

RNI N0. - RAJHIN/2021/80841
www.sanskarnews.page
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक राम गोपाल सैनी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43 ए, माली कॉलोनी, चांदपोल, जयपुर से मुद्रित तथा वार्ड नं.1, सामोद रोड़ नीमड़ी, ग्राम-मोरीजा, तहसील-चौमूँ, जिला-जयपुर से प्रकाशित। EMAIL-sanskarsrijan21@gmail.com